पश्चिम रेलवे
WESTERN RAILWAY
रतलाम मंडल

विजयस्तंभ

त्रैमासिक राजभाषा ई-पत्रिका

महिला विशेषांक

13 वां अंक
जनवरी से मार्च 2024

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री रजनीश कुमार

मंडल रेल प्रबंधक

संरक्षक

श्री अशफाक अहमद

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं

अपर मंडल रेल प्रबंधक

संपादक

श्री अमीर यादव

राजभाषा अधिकारी

एवं वमसाप्र

संपादन सहयोग

ओम प्रकाश मीना

वरि.अनुवादक

दौलत राम ताबियार

वरि.अनुवादक

राजेंद्र सेन

वरि.अनुवादक

दलवीर सिंह चौधरी

वरि.अनुवादक

विशेष सहयोग

(डिजाइनिंग)

इरशाद खान

कार्यालय अधीक्षक

अनुक्रमणिका

क्र.स			पृष्ठ
1	**संरक्षक की कलम से**	-	1
2	**अपनी बात**	-	2
3	**संपादकीय**	-	3
4	**गणतंत्र दिवस की झलकियां**	-	4-6
5	**पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की गतिविधियाँ**	-	7-9
6	**गुलावट लोटस वैली (भ्रमण)**	इरशाद खान	10-12
7	**रतलाम की उपलब्धियां**	-	13-24
8	**राजभाषा की गतिविधियाँ**	-	25-26
9	**अपनी मंज़िल (कविता)**	रक्षा पटेल	26
10	**खुशबू (कविता)**	खुशबू नानावरे	27
11	**अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की आवश्यकता (विचार)**	उदय कुंवर पंवार	28
12	**कोरोना को रोकोना (लेख)**	प्रीति श्रीवास्तव	29-30
13	**एक मुलाकात माननीय प्रधानमंत्री जी के साथ (संस्मरण)**	श्रेया चौऋषि	31-33
14	**सुभद्रा कुमारी चौहान**	राजेन्द्र सेन	34-35
15	**कोरोना कैसा आया था (कविता)**	उदय कुंवर पंवार	36
16	**पत्नी का महत्व (व्यंग्य)**	राजेन्द्र सेन	37
17	**राजभाषा संबंधी प्रश्नोत्तर**	ओमप्रकाश मीना	38
18	**ई –ऑफिस हेतु उपयोगी हिंदी नोटिंग**	दौलतराम ताबियार	39
19	**दुर्घटना राहत गाड़ी संचालन**	दुर्गा प्रसाद वर्मा	40
20	**मेरा नया बचपन**	सुभद्रा कुमारी चौहान	41

❖ पता – राजभाषा अनुभाग मंडल कार्यालय, पश्चिम रेलवे, रतलाम, मध्यप्रदेश

दूरभाष- 092-44032

❖ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और कुछ सामग्री इंटरनेट से संकलित हैं । जिससे संपादक मंडल का सहमत होना जरुरी नहीं है।

❖ निशुल्क ई –पत्रिका।

मुख्य संरक्षक की कलम से

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि रतलाम मंडल का राजभाषा विभाग गृह राजभाषा पत्रिका 'विजयस्तंभ' के तेरहवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। किसी भी समाज की उन्नति में भाषा की अहम भूमिका होती है राजभाषा पत्रिकाएं इसका निर्वहन बखूबी करती है।

आज हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न माध्यम विकसित हो चुके हैं। नई और उन्नत तकनीक आने से हिंदी को सीखना एवं सिखाना अधिक आसान हो गया है तथापि हिन्दी पुस्तकों और पत्रिकाओं का अपना विशेष महत्व होता है।

मंडल में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी के प्रति साहित्यिक अभिरुचि बढ़ाने एवं उनकी प्रतिभा विकसित करने तथा हिंदी के प्रचार- प्रसार को बढ़ाने के लिए 'विजयस्तंभ' पत्रिका का बहुत योगदान है। मंडल में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस पत्रिका के माध्यम से अपने विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का एक अवसर मिलता है। अतः आप सभी 'विजयस्तंभ' के इस अभिनव प्रयास में अपना निरंतर योगदान करते रहें।

प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी शुभकामनाएं।

रजनीश कुमार
मंडल रेल प्रबंधक

अपनी बात

यह हर्ष का विषय है कि 'विजयस्तंभ' के तेरहवें अंक का प्रकाशन राजभाषा विभाग करने जा रहा है। राजभाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों की अभिव्यक्ति दूसरों के साथ साझा करते हैं।

'विजयस्तंभ' के इस अंक के कलेवर में काफी जानकारियां समाहित हैं जो कर्मचारियों एवं अधिकारियों के हिंदी ज्ञान में सहायक होंगी तथा हिंदी के प्रयोग - प्रसार को बढ़ाने के लिए हमारे अंदर आत्मविश्वास की वृद्धि करेगी ।

मेरा सभी रचनाकारों से आग्रह है कि आप अपने लेख, कहानी, कविताएं एवं विभागों की जानकारियां 'विजयस्तंभ' पत्रिका में प्रकाशन हेतु अवश्य भिजवाएं ताकि पत्रिका के प्रकाशन का यह क्रम निरंतर चलता रहे।

प्रकाशक मंडल को मेरी शुभकामनाएं।

अशफाक़ अहमद
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक

संपादकीय

रतलाम मंडल की राजभाषा पत्रिका 'विजयस्तंभ' के तेरहवें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है। रेल कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग -प्रसार को बढ़ाने के लिए राजभाषा पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। अतः हम रेल रचनाकारों के लेखों, रचनाओं, कविताओं एवं अन्य जानकारियों को इस पत्रिका के माध्यम से आप तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं। इस अंक में हमने महिलाओं से जुड़े विभिन्न पहलुओं को शामिल करने का प्रयास किया है।

इस अंक को और अधिक रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाने के लिए हमने इसमें समसामयिक जानकारियां एवं मंडल के विभागों में हो रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारियां भी समाहित की है। आशा ही नहीं मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आपके लिए उपयोगी रहेगा। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, लेखों, कहानियों के बारे में हमें अपने सुझावों से अवगत कराते रहें ताकि आगामी अंकों को और अधिक बेहतर बनाया जा सके।

आप सभी सुधी पाठकों को मेरी शुभकामनाएं।

अमीर यादव
राजभाषा अधिकारी
एवं
वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक

गणतंत्र दिवस की झलकियां

रतलाम मंडल पर दिनांक 26.01.2024 को मंडल रेल प्रबंधक, श्री रजनीश कुमार द्वारा रेलवे ग्राउंड पर गणतंत्र दिवस राष्ट्रीय पर्व समस्त अधिकारियों /कर्मचारियों की उपस्थिति में मनाया गया। इस अवसर पर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए तथा उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

26.01.2024 की झलकियाँ

26.01.2024 की झलकियाँ

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन रतलाम की गतिविधियाँ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

दिनांक 08.03.2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन रतलाम अध्यक्षा, श्रीमती सपना अग्रवाल द्वारा एवं मंडल रेल प्रबंधक महोदय की गरिमामयी उपस्थिति में महिला रेलकर्मियों को प्रशस्ति पत्र एवं उपहार से सम्मानित किया गया ।

दिनांक 26.01.2024 को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा अरुणोदय बाल विद्या मंदिर में अध्यक्षा, श्रीमती सपना अग्रवाल के मार्गदर्शन एवं उपाध्यक्षा, श्रीमती सबीना बानों की अध्यक्षता में ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक, श्री रजनीश कुमार, अपर मंडल रेल प्रबंधक, श्री अशफाक अहमद एवं अन्य रेलवे अधिकारीगण उपस्थित हुए। इस अवसर पर संगठन की अध्यक्षा द्वारा बच्चों को उपहार वितरित किए गए।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा के करकमलों से मंडल रेल प्रबंधक , अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अन्य अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में रेलवे सांस्कृतिक सभागृह के नवीनीकरण के उपरांत गणतंत्र दिवस पर उद्घाटन किया गया ।

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन के तत्वावधान में मंडल चिकित्सालय एवं मंडल कार्यालय के सफाई कर्मियों को शुभकामनाओं सहित उपहार वितरित किए गए।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा द्वारा दिनांक 11.03.2024 को समाज के कमजोर वर्ग की महिलाओं को सेनीटरी नैपकिन वितरित किए गए।

गुलावट लोटस वैली

गुलावट लोटस वैली एक बहुत ही सुन्दर पिकनिक स्पॉट है। यह इंदौर शहर से 20 किलोमीटर की दूरी पर हातोद में स्थित गुलावट गांव है।

यहाँ पर चारों ओर लोटस (कमल के फूल) ही दिखाई देंगे, इसलिए इसे लोटस वैली कहा जाने लगा। यह लोटस वैली कई एकड़ (लगभग 300 एकड़) में फैली है जिसमें किसान कमल की खेती करते हैं। मई-जून में जब इस क्षेत्र में पानी नहीं होता है, तब कमल के बीज रोपे जाते हैं और यहां से निकलने वाले कमल के फूल इंदौर शहर के साथ-साथ

दिल्ली-मुंबई तक सप्लाई किए जाते हैं।

ये सुन्दर नजारा आपको नवंबर से लेकर फरवरी तक देखने को मिलती है, इसके बाद के महीनों में भी यहाँ बहुत ही सुन्दर नजारा होता है पर लोटस (कमल के फूल) का सीजन समाप्त होने से ये कम दिखाई देते हैं ।

देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर की गुलावट लोटस वैली पर्यटकों के लिए सबसे पसंदीदा जगह बनती जा रही है। इंदौर शहर से करीब 20 किलोमीटर दूर गुलावट गांव में यशवंत सागर डेम के बैंक वाटर से प्राकृतिक झील के रूप में बनी है

। यशवंत सागर गंभीर नदी पर एक डेम (जलाशय)है, जो मध्य प्रदेश के इंदौर जिले में इंदौर-देपालपुर रोड पर हातोद गांव के पास इंदौर से लगभग 26 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है।

यहां आप घुड़सवारी, बोटिंग, साइकिलिंग, ओपन जीप में साइट व्यू का आनंद ले सकते हैं । घोड़े, बोट , ओपन जीप, आदी पर फोटो भी शूट करवा सकते है। आपको इसी गांव के कुछ लोग ऐसे भी मिलेंगे जो अपनी साइकल को अच्छे से सजाकर रखते हैं यदि आप साइकल पर बैठकर फोटो लेते हैं जिसके लिए आपको 10 से 15 रुपये प्रति फोटो खर्च करने पड़ेंगे इसके साथ लोग यहां फोटो शूट और प्री वेडिंग शूट करने आते हैं यहाँ पर कई प्रकार के झूले भी है। जिसके प्रति व्यक्ति 10 रुपया देना होता है।

लोटस वैली में गुलाब के फूल बहुत ही काम दाम में मिलते हैं करीब 10 से 15 रुपए में आपको 5 से 10 फूलों का एक गुलदस्ता मिल जाता है। लोग लोटस वैली पर शनिवार , रविवार या छुट्टी के दिन ज्यादा आते हैं।

कुछ गांव लोग अपने खेतों से हरी सब्जी जैसे मैथी, लौकी, पालक, सरसों की भाजी, मूली, टमाटर और भुट्टे भी बेचने के लिए लेकर आते हैं । इन ताजे भुट्टों को भूनकर भी दिया जाता है जिनका स्वाद बहुत बढ़िया होता है वैसे तो यहां खाने पीने के लिए भुट्टे , भजिए, पापड़, मैगी, आलूबड़ा एवं आइसक्रीम आदी भी मिलती है लगभग 2 किलोमीटर पहले लोटस वैली रेस्टोरेन्ट एंड कैफे में खान-पान की व्यवस्था है लेकिन कई बार भीड़ ज्यादा होने पर खाना मिलता नहीं है इसलिए आप अपने साथ खाना लेकर आएं।

यदि आप इंदौर से जाना चाहते है तो तकरीबन 20 किमी हातोद (गुरदा खेड़ी) में है देवास से 55 किमी ,महू से 40 किमी एवं रतलाम से लगभग 130 किमी (देपालपुर होकर) पड़ता है यहां जाने के लिए आपको पर्सनल दो पहिया या चार पहिया वाहन से जाना होगा अन्य कोई साधन नहीं है गुलावट लोटस वैली के लिए कुछ किमी का सिंगल वन- वे गांव का रोड है जिसके दोनों ओर गांव की नालियां भी बनी होने से रोड जाम भी हो जाता है।

म.प्र. शासन प्रयासरत है की इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाए एवं यहाँ से आने - जाने के लिए चौड़े रोड बनाकर बसों की समुचित व्यवस्था की जाए।

इस खूबसूरत झील के पास ही बांस का बगीचा है। बांसों की लंबाई बहुत ज्यादा होने के कारण ये ऊपर से झुक कर आपस में मिल गए हैं। इससे इनकी खूबसूरती और बढ़ जाती है। बड़े - बड़े बांस के पेड़ों के पीछे से जब सूर्य की किरणें दिखती है तो वो नजारा देखने लायक होता है।

संकलन

इरशाद खान
कार्यालय अधीक्षक
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय रतलाम

रतलाम मंडल की उपलब्धियां

दिनांक 14,01,2024 को मकोड़िया आम, उज्जैन पर बहुविषयक क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान का शिलान्यास माननीय डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश, माननीय श्री अश्विनी वैष्णव, केन्द्रीय रेल ,संचार एवं इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री द्वारा माननीय श्री अनिल फिरोजिया, सांसद उज्जैन की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया ।

श्री नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री के कर कमलों द्वारा सपन्न हुआ(वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से) दिनांक 26.02.2024 को अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत 554 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास एवं 1500 रोड ओवर ब्रिज / अंडरपास का शिलान्यास/ उद्घाटन / राष्ट्र को समर्पित किया जिसमें लिमखेड़ा, मक्सी, मंदसौर, शुजालपुर, दाहोद, इंदौर, खाचरोद, नागदा , नीमच , सीहोर , उज्जैन स्टेशन एवं RUB 49,69,47 शामिल थे ।

दिनांक 12.03.2024 को एक स्टेशन एक उत्पाद स्टॉल का मंदसौर स्टेशन पर राष्ट्र को समर्पण श्री नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री के कर कमलों द्वारा सपन्न हुआ(वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से) । इस अवसर पर श्री मंगुभाई पटेल, राज्यपाल म. प्र . , माननीय डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश, माननीय श्री अश्विनी वैष्णव, केन्द्रीय रेल ,संचार एवं इलेक्ट्रानिक्स और सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री,श्री रावसाहेब पाटिल दानवे, केन्द्रीय रेल राज्य मंत्री ,श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश, केन्द्रीय रेल राज्य मंत्री,श्री जगदीश देवड़ा, उप मुख्यमंत्री म. प्र., श्री राजेन्द्र शुक्ल, उप मुख्यमंत्री म. प्र., श्री सुधीर गुप्ता, सांसद , श्री विपिन जैन, विधायक की गरिमामयी उपस्थिति रही ।

दिनांक 14.03.2024 को रतलाम – गोधरा खंड में दाहोद – बोरड़ी स्टेशनों के मध्य समपार संख्या – 48 के स्थान पर नवनिर्मित सड़क ऊपरी पुल का शुभारंभ श्री बचुभाई खाबड़, माननीय पंचायत एवं कृषि राज्य मंत्री , गुजरात सरकार , श्री जसवंतसिंह भाभोर, माननीय सांसद द्वारा श्री कनैयालाल बी. किशोरी, माननीय विधायक की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ ।

लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम

टीएमडीडीएस का संशोधन - आरडीएसओ संशोधन शीट संख्या आरडीएसओ/2022/ईएल/एमएस/0487 Rev.'0' दिनांक 19.09.2023 के अनुपालन में ट्रैक्शन मोटर ड्रॉपिंग डिटेक्शन सिस्टम (टीएमडीडीएस) से संबंधित संशोधन लोको में एलसीसी रतलाम में पहली बार शुरू किया गया है। लोको न. 24410 में यह उपकरण हिताची एचएस 15250ए ट्रैक्शन मोटर्स वाले इंजनों की बोगी में स्थापित किया गया है । टीएमडीडीएस द्वारा कैब में सिग्नलिंग लैंप एलएसटीएम और बजर ध्वनि के माध्यम से चालक दल को सचेत किया, जिसके बाद बीपी को "0" पर गिराकर आपातकालीन ब्रेक लगाने के साथ डीजे ट्रिपिंग हुई और एमपीसीएस डिस्प्ले में एक घटना प्रदर्शित होगी कि "डीजे बीपीईएमएस के माध्यम से ट्रिप हो गया"।

ट्रैक्शन मोटर की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए गेज का प्रावधान - आरडीएसओ एसएमआई संख्या आरडीएसओ/2007/ईएल/एसएमआई/0243 रिवी ('0') दिनांक 22.03.07 के अनुसार निर्देशों के अनुपालन में, ब्रश होल्डर और बीएचआरआर घटक और इंसुलेटर के अनुचित आयामों के कारण गुणवत्ता संबंधी विफलताओं को कम करने के लिए ट्रैक्शन मोटर अनुभाग में गेज का प्रावधान शुरू किया गया । यह गेज ट्रैक्शन मोटर के फ्लैशओवर मामलों को कम करेगा और लाइन पर लोकोमोटिव की विश्वसनीयता बढ़ाने में मदद करेगा।

संरक्षा सेमिनार -रेलवे परिचालन में संरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर, रतलाम द्वारा दिनांक 18.01.2024 को रनिंग श्रेणी के कर्मचारियों के लिए एक संरक्षा सेमिनार का आयोजन किया गया । सेमिनार में श्री जूड टी. एल्डेंस, संरक्षा सलाहकार (मुख्यालय), श्री राजेश बुंदवाल, संरक्षा सलाहकार (लोको), श्री धर्मेंद्र परिहार, संरक्षा सलाहकार (सी एंड डब्ल्यू) ने भाग लिया और श्री एम.के. शेख, सीनियर इंस्ट्रक्टर ने संबोधित किया । सेमिनार में असिस्टेंट लोको पायलट रिफ्रेशर कोर्स के कुल 59 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया । संरक्षा सेमिनार में कोहरे के मौसम में ट्रेनों के परिचालन से संबंधित नियमों और मंडल पर ट्रेनों के परिचालन के दौरान होने वाली असामान्य घटनाओं के बारे में जानकारी दी गयी । संरक्षा सलाहकार (मुख्यालय) श्री जूड टी. एल्डेंस ने पश्चिम रेलवे मे रेड सिग्नल क्रॉस करने वाली घटनाओं के बारे में जानकारी दी और रनिंग स्टाफ को यह सुनिश्चित करने के उपायों पर सलाह दी कि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों।

अग्निशमन प्रशिक्षण - दिनांक 25.01.2024 को ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर, रतलाम द्वारा लोकोमोटिव केयर सेंटर, रतलाम में कार्यरत कर्मचारियों को अग्निशमन का प्रशिक्षण दिया गया एवं मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। अग्निशमन प्रशिक्षण में उपस्थित सभी कर्मचारियों को अग्निशामक यंत्रों के प्रकार, उनके उपयोग एवं आग से बचाव तथा आपदा की स्थिति से निपटने के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। सत्र के दौरान कुल 28 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

विभिन्न प्रकार के एमसीबी, कॉन्टैक्टर और स्विच बॉक्स का वर्किंग पैनल- ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर, रतलाम में विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए आने वाले प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण के उद्देश्य से लोको में स्थापित विभिन्न प्रकार के एमसीबी, कॉन्टैक्टर और स्विच बॉक्स आदि से युक्त एक वर्किंग पैनल बनाया गया है। इस पैनल के माध्यम से प्रशिक्षुओं को, लोकोमोटिव वर्किंग की वास्तविक समय स्थितियों का व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। जैसे कि एमसीबी को कैसे रीसेट किया जाए, सामान्य और संचालित अवस्था में उनकी स्थिति क्या है और उन्हें रीसेट करते समय क्या-क्या सावधानियां बरती जानी चाहिए और इस कार्यात्मक पैनल के माध्यम से उनकी चालू और बंद स्थिति की पहचान की जाए। इसके अतिरिक्त, एमसीबी की ऑफ और ऑन स्थिति को प्रदर्शित करने के लिए एक लैंप स्थापित किया गया है और कॉन्टैक्टर को संचालित करने के लिए एक स्विच भी स्थापित किया गया है।

भारत के 75वें गणतंत्र दिवस का जश्न – भारत का 75वां गणतंत्र दिवस 26.01.2024 को लोकोमोटिव केयर सेंटर, रतलाम में पारंपरिक तरीके से पूर्ण उत्साह के साथ उस तिथि का सम्मान करते हुए मनाया गया, जिस दिन हमारे देश का संविधान वर्ष 1950 में लागू हुआ था।

1. एडीएमई/डीएल/आरटीएम द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने का समारोह किया गया और राष्ट्र गान गाया गया। फिर लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम के आरपीएफ कर्मियों द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर की औपचारिक रस्म निभाई गई। 2. गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण करने के बाद एडीएमई/डीएल/आरटीएम ने शेड कर्मचारियों को जीएम (डब्ल्यू.आर.) का संदेश संबोधित किया। 3. तत्पश्चात लोकोमोटिव केयर सेंटर के कर्मचारियों द्वारा देशभक्ति के गीत गाए गए एवं वर्ष 2023 में उनके द्वारा प्रदान की गई मेधावी सेवाओं की मान्यता के रूप में एडीएमई/डीएल/आरटीएम द्वारा 27 कर्मचारियों को योग्यता प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए। 4. अंत में शेड अधिकारियों ने इस शुभ अवसर पर शुभकामनाओं के साथ शेड कर्मचारियों को चॉकलेट वितरित की।

लोको केयर सेंटर रतलाम में किया गया तकनीकी सुधार

लोको नंबर 24442 में IRAB1 पैनल की खराबी को ठीक करना - दिनांक 29.01.24 को इनकमिंग के समय लोको नंबर 24442 में आईआरएबी1 ट्राई-माउंट पैनल (एफटीआईएल मेक) में एल/साइड से लीकेज पाया गया। खराबी को ठीक करते समय सभी संबंधित वाल्व बदल दिए गए थे लेकिन समस्या का निराकरण नहीं हो पा रहा था एवं आईआरएबी1 ट्राई माउंट पैनल को बदलने का एकमात्र विकल्प बचा था। यह IRAB1 पैनल अतिरिक्त रूप से शेड मे उपलब्ध नहीं था, इसलिए शेड कर्मचारियों के अथक प्रयासों के बाद पैनल पर R6 डमी बनाकर इस चुनौती को पूरा किया गया और R6 को बाहर स्थापित किया गया। एलसीसी रतलाम में पहली बार इस तरह का काम किया गया जिससे रेलवे का राजस्व बचाने में मदद मिली।

आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015, आईएसओ 45001:2018, आईएसओ 50001:2018 और "5एस" प्रमाणन- लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम ने आईएसओ प्रमाणन के सभी नवीनतम संस्करण जैसे आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001:2015, आईएसओ 45001:2018, आईएसओ 50001:2018 और "5एस" टिंफिकेट्स प्राप्त किये है जो एलसीसी में किए गए कार्यों की गुणवत्ता को दर्शाता है।

लोको केयर सेंटर रतलाम स्टाफ द्वारा जीवन रक्षक कार्य - दिनांक 21-02-2024 को कंटेनर यार्ड, आरटीएम में ड्यूटी के दौरान श्री जीतेन्द्र सुमन-टीसीएन ने देखा कि एक श्रमिक श्री फारूक खान गिर गये, तो तुरंत श्री जीतेन्द्र कुमार सुमन उनकी मदद के लिए पहुंचे और देखा कि श्री फारूक बेहोश हो गये हैं और साँस लेने में असमर्थ हो गया तथा उसकी हृदय की धड़कन एवं नाड़ी भी बंद हो गयी (लगभग मृतप्राय हो गयी)। फिर बिना समय बर्बाद किए, श्री सुमन ने उन्हें सीपीआर और मुंह से सांस दी, जब तक कि श्री फारूक को होश नहीं आया । श्री सुमन ने ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर, रतलाम में प्राथमिक चिकित्सा और सीपीआर प्रशिक्षण प्राप्त किया । इस तरह एक रेलकर्मी की सजगता एवं तत्परता द्वारा एक नागरिक मजदूर की जान बचाई गयी ।

लोकोमोटिव पेंटिंग ड्राइव- एलपी/एएलपी के कामकाजी माहौल को बेहतर बनाने और लोकोमोटिव के लुक को बेहतर बनाने के लिए, लोकोमोटिव पेंटिंग ड्राइव शुरू की गई। माह में 08 (शेड द्वारा 05 और पीओएच द्वारा 03) नग लोको की पेंटिंग की गई और कुल 42 लोको को पूरी तरह से पेंट किया गया।

यूएफडब्ल्यूएल मशीन से स्क्रैप संग्रहण के लिए स्थानीय कन्वेयर सिस्टम का घरेलू विकास - दिनांक 07.02.2024 को अंडर फ्लोर व्हील लेथ के निरीक्षण के दौरान व्हील टर्निंग के बाद उत्पन्न स्क्रैप को बाहर फेंकने के लिए एक स्थानीय कन्वेयर सिस्टम विकसित करने का निर्देश दिया गया था। एक पखवाड़े के भीतर मशीन शॉप के कर्मचारियों द्वारा उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके इस कन्वेयर सिस्टम को शेड में ही विकसित किया गया। यह कन्वेयर सिस्टम टायर टर्निंग स्क्रैप को हटाने में मदद करता है। इस कन्वेयर प्रणाली ने बहुत समय और जनशक्ति बचाने में मदद की और रेलवे राजस्व की बचत के साथ स्वच्छ कार्य क्षेत्र भी प्रदान किया।

राजभाषा तिमाही बैठक- लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम में दिनांक 23.02.2023 को राजभाषा तिमाही बैठक का आयोजन किया गया | उपरोक्त बैठक वरि.मं.यां.इंजी (डी) महोदय की अध्यक्षता में की गई जिसमें शेड के सदस्य एवं मंडल राजभाषा शाखा रतलाम के पदाधिकारी उपस्थित थे | राजभाषा बैठक के दौरान राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न मदों पर चर्चा की गयी | उपरोक्त बैठक में प्रत्येक माह की 14 तारीख को शेड स्तर पर 30 मिनट अवधि की राजभाषा सम्बन्धी प्रश्नोत्तरी/निबंध लेखन इत्यादि प्रतियोगिता आयोजित करने का निर्णय लिया गया |

संरक्षा सेमीनार - दिनांक **22.02.2024** को ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर, रतलाम द्वारा रनिंग श्रेणी के कर्मचारियों के लिए संरक्षा सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का आयोजन सहायक मंडल संरक्षा अधिकारी, श्री हीरा लाल सूर्यवंशी, संरक्षा सलाहकार (लोको), श्री राजेश बुंदवाल, संरक्षा सलाहकार, (एस एंड टी) श्री दीपक कुमार और वरिष्ठ प्रशिक्षक, श्री मुकेश सोनी द्वारा किया गया। संरक्षा सेमिनार में लोड स्थिरीकरण, लोड रोल की रोकथाम, ड्यूटी के दौरान सतर्कता, सिग्नलों की दृश्यता

एवं उनके आदान-प्रदान से संबंधित नियमों/प्रक्रियाओं की जानकारी दी गई तथा रनिंग स्टाफ की समस्याओं को भी प्राप्त कर उनका समाधान किया गया। सेमिनार में लोको पायलट रिफ्रेशर कोर्स के कुल **48** प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।

अग्निशमन मॉक ड्रिल -दिनांक 20.02.2024 को ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर, रतलाम द्वारा लोकोमोटिव केयर सेंटर, रतलाम में कार्यरत कर्मचारियों के लिए मॉक ड्रिल एवं अग्निशमन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। अग्निशमन प्रशिक्षण में उपस्थित सभी कर्मचारियों को अग्निशामक यंत्रों के प्रकार, उनके उपयोग एवं आग से बचाव तथा आपदा की स्थिति से निपटने के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस सत्र में कुल 295 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया

स्वच्छता पखवाड़ा- दिनांक **29.01.2024** को शेड परिसर निरीक्षण के दौरान प्रत्येक शनिवार को **1** घंटे के लिए शेड कर्मचारियों द्वारा "श्रमदान" गतिविधि करने का निर्देश दिया गया था। फरवरी माह से प्रत्येक शनिवार को शेड के सभी कर्मचारियों द्वारा नियमित रूप से "श्रमदान" किया जा रहा है जिसमें पिट लाइनों, अनुभाग क्षेत्र और फर्श, बगीचे में अतिरिक्त वनस्पति को हटाने के साथ-साथ सफाई की जाती है। श्रमदान के लिए विभिन्न गुणवत्ता वाली इकाइयाँ लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम को शेड परिसर की साफ-सफाई और हरियाली बढ़ाने के लिए संबंधित क्षेत्र और आसपास के बगीचे आवंटित किए गए हैं।

शंटिंग के दौरान लोको में 15 किमी प्रति घंटे की गति प्रतिबंध संशोधन का प्रावधान-

आरडीएसओ संशोधन शीट संख्या ईएल/2.2.9/10 दिनांक 26.05.2023 के अनुपालन में कन्वेन्शनल इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव में 15 किमी प्रति घंटे तक गति प्रतिबंध का प्रावधान शुरू किया गया था। स्पीडोमीटर के अतिरिक्त रिले आउटपुट एन/ओ संपर्क का उपयोग करके शंटिंग मोड संचालन सुनिश्चित करने के लिए, इस संशोधन को 98 लोकोमोटिव में लागू किया गया है।

हाई मास्ट की स्थापना:- एलसीसी रतलाम ने बेहतर रोशनी के लिए शेड परिसर में चिन्हित स्थानों पर 4 हाईमास्ट स्थापित किए जा रहे है, जो काम के दौरान कर्मचारियों की सुरक्षा बढ़ाने में मदद करेंगे। यह कार्य PH-42 अम्ब्रेला वर्क में शुरू किया गया है और वर्तमान में कार्य पूरा होने के अंतिम चरण में है।

यू.डी.एम. प्रशिक्षण - - लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम के पर्यवेक्षकों (एसएसई और जेई) के लिए आईआरईपीएस पोर्टल, यूडीएम ज्ञान और उस पोर्टल में वारंटी क्लेम करने की प्रक्रिया का प्रशिक्षण ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर रतलाम द्वारा दिनांक 21.03.2024 को एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया।

अग्निशमन मॉक ड्रिल – दिनांक 26.03.2024 को ट्रैक्शन ट्रेनिंग सेंटर, रतलाम द्वारा लोकोमोटिव केयर सेंटर, रतलाम में लोको पायलेट और ए.लोको पायलेट के लिए मॉक ड्रिल और अग्निशमन प्रशिक्षण का आयोजन किया। अग्निशमन प्रशिक्षण में उपस्थित सभी लोको पायलेट और ए.लोको पायलेट को अग्निशामक यंत्रों के प्रकार, उनके उपयोग एवं आग से बचाव एवं आपदा की स्थिति से निपटने के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इस सत्र में कुल 26 एलपी एवं एएलपी ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सीएमपीई/डीएसएल/सीसीजी द्वारा लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम का निरीक्षण -

दिनांक 20.03.2024 को एलसीसी आरटीएम का निरीक्षण श्री डी.के. त्रिपाठी, सीएमपीई/डीएसएल/सीसीजी द्वारा किया गया , निरीक्षण के दौरान शेड की प्रगति और एसी लोकोमोटिव के साथ-साथ डीजल लोकोमोटिव के रखरखाव में निरंतर सुधार और प्रगति की सराहना की गई। सीएमपीई/डीएसएल/सीसीजी द्वारा स्विच गियर क्वालिटी यूनिट में नवनिर्मित ईएमसी परीक्षण बेंच का उद्घाटन किया गया। शेड अधिकारियों के साथ बैठक के दौरान शेड के विभिन्न विवरणों और मुद्दों सहित एलसीसी आरटीएम पर एक विस्तृत प्रस्तुति देखी गई और चर्चा की गई।

हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता –

लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम मे सम्पन्न राजभाषा बैठक में चर्चानुसार हिंदी प्रश्नमंच का आयोजन दिनांक 14.03.24 को कर्षण प्रशिक्षण केन्द्र मे आयोजित किया गया और इस प्रतियोगिता मे लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम के 30 कर्मचारियों ने भाग लिया। उपरोक्त प्रतियोगिता में कर्मचारियों द्वारा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया गया।

लोकोमोटिव केयर सेंटर,रतलाम में
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन-

लोकोमोटिव केयर सेंटर रतलाम में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया और समारोह का आयोजन एलसीसी रतलाम के महिला कर्मचारियों द्वारा किया गया जिसमें विभिन्न गतिविधियाँ की गईं और उपहार वितरित किए गए

अन्य राजस्व प्राप्ति - एलसीसी रतलाम आधारित 02 नग अधिक पुराने लोको की नीलामी की गई है, जिनमें से 01 WAG5 इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव और 01 डीजल लोको है, जिससे रुपये 1,73,37,563/- का राजस्व अर्जित किया गया है।

वर्ष 2023-24 में नीलाम किये गये 28 एसी + 01 डीजल लोको द्वारा अर्जित कुल राजस्व 25,48,45388/- रुपये है।

******

यांत्रिक विभाग रतलाम

1. **वैगन डिपो,शंभूपुरा द्वारा वैगनों का एक महीने में अब तक सबसे अधिक आरओएच :**

जनवरी -2024 माह में वैगन डिपो,शंभूपुरा द्वारा 177 वैगनों का आरओएच किया गया जोकि एक माह में अब तक वैगनों का सबसे अधिक आरओएच है। इससे पहले एक माह में 175 वैगनों का आरओएच अप्रैल-23 और मई-23 में किया गया था।

2. **वैगन डिपो, शंभूपुरा द्वारा एक महीने में अब तक का सबसे अधिक सिक वैगन फिट किये गए:**

जनवरी -2024 माह में वैगन डिपो, शंभूपुरा द्वारा 1002 सिक वैगनों को सिक लाइन में फिट किया गया, जो कि एक माह में अब तक सबसे अधिक सिक वैगन फिट गए है। इससे पहले एक माह में 985 सिक वैगन को अक्टूबर-23 में फिट किये गये थे।

3. **वैगन डिपो, शंभुपुरा में माल गाड़ियों के परीक्षण में वृद्धि:**

वैगन डिपो, शंभुपुरा में वर्ष 2022-23 में 2109 माल गाड़ियों की तुलना में वर्ष 2023-24 में 2209 माल गाड़ियों का परीक्षण किया गया अर्थात् वैगन डिपो, शंभुपुरा में वर्ष 2023-24 में 2022-23 की तुलना में माल गाड़ियों के परीक्षण में 5% वृद्धि हुई है।

4. **वैगन डिपो, शंभुपुरा के आरओएच आउट-टर्न में वृद्धि:**

वर्ष 2022-23 में 1435 वैगनों के आरओएच की तुलना में वर्ष 2023-24 में 1856 वैगनों का आरओएच किया गया अर्थात् वैगन डिपो, शंभुपुरा के आरओएच आउट-टर्न में 2023-24 में 2022-23 के संदर्भ में 29% की वृद्धि हुई है।

5. **वैगन डिपो, शंभुपुरा के सिक लाइन आउट-टर्न में वृद्धि:**
वर्ष 2022-23 की 8805 वैगनों की तुलना में वर्ष 2023-24 में 10549 सिक वैगनों को फिट किया गया अर्थात् वैगन डिपो, शंभुपुरा के सिक लाइन आउट-टर्न में 2023-24 में 2022-23 के संदर्भ में 20% की वृद्धि हुई है।

7. **वैगन डिपो, डाउन यार्ड, रतलाम में बीएलसी रेक का सीसी परीक्षण दिनांक 11.01.2024 शुरू किया गया :**
वैगन डिपो, डाउन यार्ड/रतलाम में बीएलसी वैगन रेक का सीसी परीक्षण दिनांक 11.01.2024 शुरू किया गया और वर्ष 2023 -24 में कुल 03 बीएलसी रेक का सीसी परीक्षण किया गया।

6. **इंदौर स्टेशन पर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का निपटान(Disposal of solid waste management):**
मेसर्स किंग्स सिक्योरिटी एंड गार्ड प्राइवेट लिमिटेड द्वारा ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का कार्य दिनांक 03.12.2023 को प्रारंभ किया गया। दिनांक 17.01.2024 को एक पूर्ण स्वचालित मशीन एवं एक प्लास्टिक क्रशर स्थापित किया गया है। यह प्रणाली कुशल अपशिष्ट पृथक्करण, प्लास्टिक निपटान और गीले कचरे से खाद तैयार करना सुनिश्चित करती है और टिकाऊ अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देती है।

7. **वैगन डिपो, शंभूपुरा में जीपीडब्ल्यूआईएस के तहत अल्ट्रा टेक सीमेंट लिमिटेड के स्वामित्व वाले पहले बॉक्सएनएचएल वैगन रेक का दिनांक 27.02.24 को कमीशनिंग और परीक्षण किया गया :**
GPWIS के तहत अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड के स्वामित्व वाले BOXNHL वैगनों की पहली रेक का दिनांक 27.02.24 को कमीशनिंग और परीक्षण किया गया। इस रेक का सीसी परीक्षण वैगन डिपो, शंभुपुरा द्वारा फॉइस (FOIS) रेक आईडी आरके-यूटीसीएल-03 के साथ किया गया और नामांकित क्लोज्ड सर्किट के लिए 27.02.24 को फॉइस (FOIS) / एफएमएम (FMM) के माध्यम से बीपीसी जारी किया गया।

8. वंदे भारत (VB) एक्सप्रेस के 23वें रेक के व्हीलो की शेड्यूल्ड रिप्रोफाइलिंग का कार्य पुरा किया गया :

वंदे भारत एक्सप्रेस की 23वें रेक का प्राइमरी रखरखाव दिनांक 27.06.2023 से इंदौर डिपो द्वारा किया जा रहा है। आरडीएसओ के दिशानिर्देशों के अनुसार, उपरोक्त रेक के सभी कोचों के व्हीलो की शेड्यूल्ड रिप्रोफाइलिंग 15.03.2024 को कोच केयर कॉम्प्लेक्स, डीएडीएन डिपो की लेथ मशीन द्वारा शुरू हुई और कोचों की टायर टर्निंग 20.03.24 को सफलतापूर्वक पूरी हो गई।

9. डॉ. अंबेडकर नगर (डीएडीएन) डिपो में पिट लाइन नंबर 3 की कमीशनिंग:

डॉ. अंबेडकर नगर डिपो की पिट लाइन नंबर 3 की कमीशनिंग और परिचालन दिनांक 24.03.2024 को ट्रेन नंबर 09547 डेमू के साथ 14:00-22:00 बजे के बीच 09 टीसी और 03 डीपीसी वाले 12 कोचों के भार के साथ शुरू हुआ।

****

राजभाषा की गतिविधियाँ

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

दिनांक 23.01.2024 को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति रतलाम की बैठक का आयोजन किया गया इस बैठक में अधिकारियों एवं स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों ने भाग लिया एवं मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में प्रश्नमंच का आयोजन किया गया तथा विजेता अधिकारियों को नकद पुरस्कार दिया।

मंडल पर कर्मचारियों की सहायतार्थ हिन्दी कार्यशाला का आयोजन–

दिनांक 16.02.2024 से 22.02.2024 तक उज्जैन एवं रतलाम के कार्यालयों के कर्मचारियों की सहायतार्थ संयुक्त हिंदी कार्यशाला का ऑनलाइन आयोजन किया गया । इसमे 31 कर्मचारियों ने भाग लिया |

मंडल पर प्रसिद्द साहित्यकारों की जयंती मनाना

रतलाम मण्डल पर चित्तौड़गढ़ स्टेशन पर दिनांक 21.02.2024 को साहित्यकार सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला ' की जयंती का आयोजन किया गया।

******

अपनी मंज़िल

कविता

अब तो है मुझे, अपनी मंज़िल को पाना।

अब तो है मुझे, अपनी मंज़िल को पाना।

और उन सभी आदतों को भूल जाना,

जो रोकती है मुझे, अपनी मंज़िल को पाने से।

और रोका है जिसने, इसके सजदे में सिर झुकाने से।

अब न किसी ओर मुखातिब होना, गंवारा मुझे ,

और न ही अपनी सफलताओ से मुंह मोड़ना, स्वीकार मुझे।

अब तो है मुझे, अपनी ज़िन्दगी में आगे बढ़ते जाना।

न कि अपने लक्ष्य को पूरा करने से भटक जाना ,

अब तो है मुझे, अपनी मंज़िल को पाना।

अब तो है मुझे, अपनी मंज़िल को पाना।

रक्षा पटेल
जूनियर क्लर्क कम टाइपिस्ट
लोकमोटिव केयर सेंटर रतलाम

खुशबू

कविता

एक भीनी सी खुशबू हूं, हवाओं में घुल जाने दो मुझे
आसमान को छूता परिंदा हूं उड़ जाने दो मुझे॥
ना रोको मुझे, ना टोको मुझे ठोकरों से रूबरू होने दो,
नहीं चलना किसी के सहारे, गिर कर खुद संभलने दो॥

गीत हूं उम्मीदों भरा, इसे गुनगुनाने दो मुझे
एक भीनी सी खुशबू हूं, हवाओं में घुल जाने दो मुझे॥
आसमान को छूता परिंदा हूं उड़ जाने दो मुझे,
नहीं बनना किसी और के जैसा, क्योंकि मुझ जैसा कोई और नहीं॥

मेरे भी अपने रास्ते हैं, मंज़िल मेरी दूर सही
लड़खड़ाते हुए क़दमों से, मंज़िल को मेरी पाने दो मुझे॥
एक भीनी सी खुशबू हूं, हवाओं में घुल जाने दो मुझे,
आसमान को छूता परिंदा हूं उड़ जाने दो मुझे ॥

जिस पर कायम है दुनिया पूरी, उम्मीद का वहीं एक दीया हूं
जो ना रुके कभी जो ना थके कभी, सोच का बहता ऐसा एक दरिया हूं॥
खुद से खुद की जंग है, जीत जाने दो मुझे,
एक भीनी सी खुशबू हूं, हवाओं में घुल जाने दो मुझे॥

आसमान को छूता परिंदा हूं उड़ जाने दो मुझे
अभी तो बहुत कुछ कहना है, अभी तो बहुत कुछ करना है॥
सपनों की इस बारिश में, अभी कुछ और पल भीगना है,
अभी तो शुरू हुई है ज़िंदगी की दौड़, थोड़ा पसीना भी बहाने दो मुझे ॥

एक भीनी सी खुशबू हूं, हवाओं में घुल जाने दो मुझे
आसमान को छूता परिंदा हूं उड़ जाने दो मुझे॥
मेरी भी खुद की एक पहचान है, मेरे सपनों में भी जान है,
मेहनतकश हूं हार नहीं मानता कभी॥

क़दम थके हैं थोड़े, मगर हौसला अभी जवान है
रुक-रुक कर ही सही, चलते जाने दो मुझे ॥
एक भीनी सी खुशबू हूं, हवाओं में घुल जाने दो मुझे ,
आसमान को छूता परिंदा हूं उड़ जाने दो मुझे॥

श्रीमति खुशबू नानावरे
टी सी एन – I
लोकोमोटिव केयर सेंटर , रतलाम

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की आवश्यकता

विचार

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस जो कि प्रतिवर्ष 08 मार्च को मनाया जाता है, जिसमें हर संस्थान एवं संगठन के कमर्चारी अपने साथ काम करने वाली महिलाओं का जोर शोर से सम्मान करते है। इस दिवस पर राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, स्थानीय एवं मुख्यालय स्तर पर उत्कृष्ट महिलाओं को पुरुस्कृत किया जाता है । दिन भर महिलाओं के सम्मान में बड़े – बड़े भाषण दिए जाते है, नई घोषणाएँ की जाती है, महिलाओं को पिकनिक पर ले जाया जाता है, उन्हें उपहार प्रदान किये जाते हैं और जैसे ही यह 08 मार्च का दिन समाप्त होता है।

एक औरत का जीवन फिर उसी पटरी पर दौड़ने लगता है, जिस पटरी पर पहले दौड़ रहा था। कहने का मतलब है कि नारी के बिना सृष्टि की कल्पना ही नहीं की जा सकती उस नारी को महिला दिवस मनाकर यह बताया जाता है कि तुम एक विलुप्त होने वाली जाति के अन्दर आती हो, साथ ही यह भी बताया जाता है कि आज तक तुम कितनी प्रताड़ित रही हो, कितने दुःख तुमने सहे, तुम एक अबला हो और अब सबला बन गई हो। कामकाजी महिलाओं के संस्थान में बड़े स्तर पर कार्यक्रम किये जाते है और उसे ये एहसास कराया जाता है कि देखो आज तक तुम्हारा किसी ने इतना सम्मान किया है, यह तो केवल हमने किया है। लेकिन इस दिवस को मनाने की जरुरत ही क्या है ? दिवस उसका मनाया जाता है जिसे भूला दिया जाता है। एक औरत कई रिश्तों में विभाजित रहती है। वह किसी की पत्नी, किसी की माँ, किसी की बहन तो किसी की बेटी होती है और इतने महत्वपूर्ण रिश्तों को कोई कैसे भूला सकता है। यदि हम किसी रिश्ते को भूले ही नहीं है तो फिर उसका दिवस मनाना क्यों ?

एक दिन किसी महिला को सम्मान देने से उसके जीवन में बहुत बड़ा बदलाव नहीं आ जायेगा। यदि महिला का सम्मान करना ही है तो उसे हर दिन उतना ही सम्मान देना होगा जितना पुरुष वर्ग को मिलता है। आज घरो में यदि एक पुरुष घर के बाहर शासकीय अथवा निजी व्यवसाय में कार्य करता है तो घर पर आने के बाद उसे एक शहंशाह की तरह सम्मान मिलता है। लेकिन एक महिला बाहर कार्य करती है तो घर आने के बाद उसकी जिम्मेदारियां उसका इंतजार कर रही होती है |उसे वो सब कुछ निभाना है जो एक गृहिणी निभाती है। इसका मतलब जीवन में कामयाब होकर उसने क्या पाया यह तो अलग तथ्य है पर अपना सुख-चैन वह जरुर ख़त्म कर लेती है, क्योंकि उसे बाहर काम करने की अनुमति इसी आधार पर मिलती है कि घर के काम भी संभालो और करो बाद में नौकरी। तो फिर बताइए कि सशक्त कौन हुआ ? एक महिला या एक पुरुष। एक महिला घर का काम करके भी नौकरी कर लेगी और पुरुष पूरी नौकरी एक महिला के सहारे ही करता है।

यदि हमारा इतिहास देखे तो कई वीरांगनाओं ने देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। अंग्रेजो के विरुद्ध कई एतिहासिक लड़ाईयां लड़ी और वीरगति को प्राप्त हुई। जिस देश में महिलाये राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल, वित्त मंत्री, रक्षा मंत्री और न जाने कितने बड़े पदों पर पदस्थ रही हो उस देश में महिलाओं को कमजोर समझकर उसका दिवस मनाना मेरी नजर में एक ढोंग है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस उन महिलाओं के लिए मनाओ जो आज के दौर से अनभिग्य है। निरक्षर है बेरोजगार है जिन्हें अपने अधिकारों का ज्ञान नहीं है तथा जो मूलभूत सुख सुविधाओं से ही वंचित रही हो तथा जो आज भी बदहाली का जीवन जीने को मजबूर हो। स्थानीय शासन द्वारा यह घोषणा होनी चाहिए कि जो भी महिलाएं अपने आसपास रहने वाली अथवा अपने संपर्क में आने वाली कम से कम दस निरक्षर या बेरोजगार महिलाओ को शिक्षित करेगी अथवा रोजगार से जोड़ने का कार्य करेंगी उन्हें महिला दिवस पर राज्य अथवा राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जायेगा। तब तो इस दिवस का कोई महत्व है, अन्यथा यह दिवस किसी धूम धड़ाके एवं मनोरंजन के साधन के अलावा कुछ भी नहीं है|

उदय कुंवर पंवार

पदनाम - गोपनीय सहायक(संरक्षा)

मंडल कार्यालय रतलाम

कोरोना को रोकोना

लेख

विपत्ति भरा समय आया, एक अनजान, अदृश्य, अनदेखा, छलिया, दुश्मन अंगुली पकड़कर सीधे पहुंचा, पकड़ने वाला दुश्मन। यह दुश्मन था या मित्र। मित्र कहना बेमानी होगा। कहते है ना, हजार मित्रों से एक समझदार दुश्मन बहुत कुछ सिखाता है।

इसी प्रकार इस दुश्मन ने भी हमें बहुत कुछ सिखाया। हम अपनी पुरातन संस्कृति भूल चुके थे, उससे हमें अवगत कराया। लॉक डाउन के समय पारिवारिक मूल्यों, संबंधों, पुराने मनोरंजन के सार्थक व ज्ञानवर्धक साधनों से बच्चों को अवगत कराया। बच्चें फिर एक बार दादा-नाना / दादी-नानी की कहानियों में खोये। परियाँ जिन्हें समय अपने साथ उड़ा ले गया था, वो परियाँ पुनः एक बार नन्ही कलियों के मस्तिस्क में जादुई करतब दिखने लगी। "अपने हाथ जगन्नाथ " वाली कहावत घर घर चरितार्थ हुई जिन घरो में (कामवाली) मेड के बिना काम न चलता था। उनकी लगाम घर के सभी सदस्यों ने सम्हाली और जीवन रथ की गति की निरंतरता को कायम रखा। परिवार के सदस्यों ने साथ मिलकर फिर दस्तरखान सजाया, कोरोना काल ने पीढियों के अंतर को कम किया। दादा-नाना ने नाती-पोतो से मोबाइल- व्हाटसअप चलाना सिखा और बदले में अनुभव अर्जन का दमन थामा। अनुभव की आँखों से दुनिया के दर्शन किये।

कोरोना कल कभी- कभी अज्ञातवास की तरह प्रतीत हुआ। किसी से कोई वास्ता न रहा, तब संबंधों की अहमियत को शिद्दत के साथ महसूस किया गया।

जीवन कितना क्षण भंगुर होता है। जिसे नष्ट करने के लिए किसी दैत्य की नहीं, अदृश्य वायरस भी आहत कर सकता है।

यह कुछ - कुछ कबड्डी के खेल की तरह रहा, उखड्ती हुई सांसो के साथ सभी ने पाला छूने की कोशिश की। कुछ खिलाडी आउट भी हुए , कुछ ने पाला छूकर जीवन दान पाया। कहना उचित

होगा कि, पुनर्जीवन पाया। पुनर्जीवन के इस पल ने हमारे मस्तिष्क को झंझोड़कर रख दिया, एक पल को हम सब कुछ छोड़कर जा रहे थे।

अब हमारा नजरिया सबके प्रति परिवर्तित हो चला, अब कोई दुश्मन न रहा। कोई भी पल जीवन का आखरी पल हो सकता है। यह समझने वाला व्यक्ति हमारा बुराईयो से बचा रहता है। इसकी व्याख्या बाय हार्ट याद हो गई।

इस विपत्ति भरे समय में कई परिवारों ने अपने पालनहार खोये, कई बच्चें अपने सरपरस्त से महरूम हुए। कई समाज सेवी संस्थान आगे आई। समाज सेवा जो अखबार की सुर्खिया बटोरने का साधन मात्र हो चली थी, उससे उसने अपना वास्तविक रुप पाया और समाज सेवा पुनः संतुष्टि का माध्यम बनी। समाजसेवा का निस्वार्थ स्वरुप सामने आया। स्वरोजगार और रोजगार के नए संसाधनों का प्रादुर्भाव हुआ। सबसे सकारात्मक पहलु यह रहा की हमने टेक्नोलॉजी के सकारात्मक उपयोग की और कदम रखा। नई तकनीकि सच्ची सहेली साबित हुई। ऑनलाइन / डिस्टेंस कोर्स / वर्क फ्राम होम जैसे नए आयाम हासिल किये।

क्लास में कुछ बिगड़े विधार्थी रहते है। इस प्रकार कोरोना की पाठशाला में भी बिगड़े विधार्थियों ने जीवन रक्षक दवाईयों की कालाबाजारी कर मानवता को आहत किया, लेकिन ऐसे विधार्थी अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सके क्योकि हमारी पाठशाला के हेड मास्टर बड़े कड़क मिजाज थे, उन्होंने सभी को कान पकड़ कर खड़ा करने में कोताही नहीं बरती।

विपत्ति भरे समय में भी भारत ने फिर विश्व पटल पर अपने हस्ताक्षर किये, एक बार पुनः भारत का "नमस्ते" दुनिया में अभिवादन का पर्याय बना। योग मुद्राओं ने पुनः जीवन शैली में स्थान पाया। जीवन में मितव्यता, किफायत जैसे शब्दों कि सर्थाकता का आभास हुआ। कोरोना काल में स्वच्छता एवं सादगी ने अपने जलवे बिखेरे।

क्यों ना इस विपत्ति भरे समय ने हमें जो भी सिखाया है उसके सकारात्मक पहलु को ग्रहण करे व नकारात्मक पहलु को जीवन से भुलाकर जीवन के नए अध्याय को लिखे।

जो परिंदों ऊँची उड़ान भरकर कही और आशियाना बनाने निकल पड़े थे, वे रैनबसेरा छोड़कर परिंदों की भांति अपने घोसलों में वापस लौट आये है। और अब अपनी सारी ऊष्मा को अपनी जड़ों को सिंचित करने में उपयोग करना चाहते है।

इंजी. प्रीति श्रीवास्तव.
वरिष्ठ अनुदेशक, टी टी सी रतलाम

एक मुलाकात माननीय प्रधानमंत्री जी के साथ संस्मरण

दिनांक 30 सितंबर 2023 को दैनिक जीवन की कार्यप्रणाली के अनुसार मैं घर से ऑफिस की ओर निकली। सामान्य दिन की तरह शुरुआत हुई। अगले दिन दिनांक 01 अक्टूबर 2023 रविवार रेस्ट के दिन के साथ 02 अक्टूबर का राष्ट्रीय अवकाश होने की खुशी के साथ सभी साथी कर्मचारी ऑफिस के कामों को जल्दी -जल्दी निपटाने में लगे हुए थे। ऑफिस में सभी ने अपनी-अपनी अवकाश की योजना बनाई हुई थी और मैंने भी बहुत कुछ सोच लिया था। शाम को ऑफिस के काम खत्म कर मैंने घर की ओर अपना रुख किया ही था, कि मुझे अपने मोबाईल की घंटी सुनाई पड़ी। मोबाईल देखने पर पता चला कि फोन मंडल कार्यालय से आया है। फोन के दूसरी ओर से संध्या मैडम की आवाज सुनाई दी और सामान्य औपचारिकता के बाद मैडम ने मुझसे कहा कि "श्रेया! क्या अग्रिम अवकाश के दिन कोई योजना बनाई हुई है", प्रतिउत्तर में मैंने कहा "मैडम! मैंने बहुत कुछ सोचा हुआ तो है, अवकाश का सदुपयोग करने के लिए कहीं बाहर जाने की योजना है"। मैडम ने कहा "श्रेया, क्या तुम माननीय प्रधानमंत्री जी के कार्यक्रम में जाने के लिए अपने अवकाश को रद्द कर सकती हो"। थोड़ी देर मुझे समझ ही नहीं आया कि क्या मैं सही सुन पा रही हूँ या नही, इसके बाद मैंने तुरंत पुष्टि हेतु मैडम से पूछा "आप प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की बात कर रहे हो"? मैडम ने कहा "बिल्कुल सही सुना तुमने, वेस्टर्न रेल्वे की बहुत सी परियोजनाओं के उद्घाटन हेतु माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को एक रिमोट कंट्रोल देने का कार्य दिया जाएगा अगर तुम तैयार हो, तो तुम्हारा नाम चयन कर आगे की कार्यवाही हेतु अग्रेषित करना होगा और तुम्हें कल ही निकालना होगा। जिससे कार्यक्रम ही रूपरेखा उत्तम रूप से तुम्हें पता चल पाएगी" और मेरा उत्तर था कि "जरूर मैडम, मना करने का कोई सवाल ही नहीं है, आप बताइए मुझे कैसे तैयारी करनी है"। उन्होंने कहा "ठीक है, थोड़ी देर में तुमको वरि.मं.कार्मिक अधिकारी श्रीमती अरिमा भटनागर मैडम से बात करनी होगी और वो तुम्हें कार्यक्रम हेतु निर्देश देंगे"। कुछ क्षणों बाद वरि.मं.कार्मिक अधिकारी मैडम से विडिओ कॉल के जरिए मेरी बात हुई और कार्यक्रम के बारे में सभी दिशा निर्देश मुझे प्राप्त हुए। सारी औपचारिक बातचीत खत्म होने के पश्चात दो मिनिट तक मैं फोन को घूर-घूर कर देखने लग गई और सोचने लगी कि जो कुछ भी अभी मैंने सुना वो सच ही था या मैं कोई सपना देख रही हूँ। फिर वर्तमान में लौटकर अतिउत्साह में अपने मम्मी और पापा को जोर से पुकारने लगी। दोनों को जल्दी-जल्दी एक ही साँस में पूरी बात बताकर मैं अगले दिन की तैयारी में जुट गई क्योंकि मुझे बहुत सारे निर्देश मिल चुके थे जैसे ड्रेसकोड, पहचान पत्र, औपचारिक शिष्टाचार का पालन इत्यादि और उन सभी को निभाने का दायित्व भी महसूस हो रहा था।

अगले दिन सुबह 6 बजे की ट्रेन से मैं अपने जीवन की सबसे रोमांचक यात्रा पर बड़े ही उत्साह और उमंग के साथ निकली। यात्रा की शुरुआत में हमें रतलाम मंडल की मेडिकल टीम मिली और उन सभी को भी कार्यक्रम में सम्मिलित होने ही जाना था। सभी बहुत खुश दिखाई दे रहे थे। उसके बाद हम सभी ने नाश्ता किया और यात्रा के मध्य ही कल्याण निरीक्षक बैरागी जी ने मुझे कार्यक्रम की सारी जानकारी बताई और चित्तौड़ में हमारे 2 दिन के कार्यक्रम की पूरी जानकारी दी। चित्तौड़ स्टेशन पँहुचते ही हमें अहमदाबाद के श्री प्रदीप शर्मा जी मिले और उनके साथ कार्यक्रम की संचालिका भी थी। सभी को अभिवादन करने के बाद सड़क रास्ते के द्वारा हम साँवरिया सेठ, मंडफिया ग्राम की ओर रवाना हुए।

वाहन में सभी से एक औपचारिक परिचय के दौरान मुझे पता चला कि पहले दिन कार्यक्रम का पूर्वाभ्यास होगा और वेस्टर्न रेल्वे के जीएम सर स्वयं आकर पूरा अभ्यास देखकर सुनिश्चित करेंगे। थोड़ी ही देर में हमें "श्री साँवरिया सेठ,

मंडफिया ग्राम" का स्वागत द्वार दिखाई दिया। द्वार को देखते ही खुशी की एक नई लहर अपनें भीतर महसूस की और सबसे पहले प्रणाम करते हुए भगवान श्री साँवरिया सेठ को मन ही मन धन्यवाद दिया। कार्यस्थल पर पँहुचते ही मैंने देखा कि बहुत ही बडा-सा शानदार पांडाल बना हुआ था और वहाँ बड़े ही जोर-शोर से तैयारियाँ चल रही थी। मेरे लिए यह अपने पूरे जीवनकाल का प्रथम अनुभव था, इस कारणवश अचंभित होकर मैं सभी ओर देख रही थी। कार्यक्रम स्थल पर रतलाम मंडल के सभी विभागों की टीम तैयारियों में जुटी हुई थी, बहुत से चिर -परिचित चेहरे दिखाई दे रहे थे। उसी समय मुझे आदरणीय डीआरएम सर से मिलवाया गया उन्होंने मुझसे कार्यक्रम में मेरी भूमिका से संबंधित कुछ प्रश्न किए और चूंकि मुझे पहले ही सभी ने बहुत कुछ समझा दिया था इस कारण मैंने अपनी योग्यता अनुसार उनके उत्तर दिए। फिर माननीय प्रधानमंत्री जी कि सुरक्षा टीम ने भी मेरा सम्पूर्ण परिचय लेकर कुछ विशेष निर्देश दिए। कार्यक्रम की संचालिका मैडम के साथ मेरी टीम बनाकर पूर्वाभ्यास शुरू हुआ। मुझे बताया गया कि मंच पर मुझे कब चलकर माननीय प्रधानमंत्री तक पँहुचना है और एक रिमोट उन्हें देना है, जिससे रेल्वे की परियोजनाओं का अनावरण करेंगे। देखने में यह सम्पूर्ण कार्यक्रम का एक बहुत ही छोटा सा भाग लग रहा था परंतु सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा था और इसमें मुझे छोटी सी चूक भी नहीं करनी थी। मैं थोड़ी हैरान, थोड़ी रोमांचक, थोड़ी डरी हुई और आनंदित थी। एक के बाद एक लगातार हमनें मिलकर खूब सारे अभ्यास किए। आदरणीय जीएम सर ने स्वयं पूरे कार्यक्रम को देखकर अपनी सहमति प्रदान की और इस पूरी प्रक्रिया में रात के 9 बज गए। थकान से भरे हुए सभी लोग रात्रि विश्राम करने निकल गए क्योंकि अगले दिन सुबह जल्दी आना था। सुबह 7 बजे हम सभी बिल्कुल तैयार हो कर कार्यक्रम स्थल की ओर निकले जैसे ही हम मुख्य सड़क पर आए तब मैंने देखा गाड़ियों का एक बड़ा-सा मेला लगा हुआ था। जहाँ तक नज़रे देख पाती है, वहाँ तक लोगों की भीड़ ही भीड़ नजर आने लगी। हम सभी को एंट्री-पास मिले हुए थे, हमारी गाड़ी जैसे-जैसे आगे बढ़ने लगी वैसे-वैसे मन में रोमांच भी बढ़ता जा रहा था पुनः सारी औपचारिक जाँच होने के बाद मैं मंच की ओर बढ़ी, मंच के इस ओर से अलग ही दृश्य दिखाई दे रहा था, सभी साथी कर्मचारी दौड़-भाग और तैयारियों में लगे हुए थे। सुरक्षा टीम ने मंच पर प्रत्येक छोटी- छोटी वस्तुओं की अनेक बार जाँच की। कार्यक्रम स्थल पर गृह मंत्रालय, आई-बी टीम, एसपीजी कमांडो टीम, दूरदर्शन टीम के साथ पश्चिम-रेल्वे के बहुत सारे कर्मचारी लगे हुए थे। सभी लोगों ने इतने दिनों की कड़ी मेहनत आज के इस दिन के लिए ही की थी। मैंने एक-दो बार पुनः अभ्यास किया और लाइट, कैमरा, साउंड, स्क्रीन इत्यादि की भी अनेकों बार जाँच की जा रही थी। कल से लेकर आज तक इस सम्पूर्ण प्रक्रिया की सेंकड़ों बार पुनरावृत्ति की जा चुकी थी, जिस कारण मैं अपने कार्य को लेकर निश्चिंत हो चुकी थी। कुछ घंटों के इंतज़ार के पश्चात मुझे निर्देश मिले कि थोड़ी देर में माननीय प्रधान मंत्री जी आने ही वाले है और उनके साथ कुछ राजस्थान के कुछ मंत्री, कुछ नेता भी होंगे। इसके साथ ही यह जानकारी मिली कि कार्यक्रम के प्रारूप में थोड़ा-सा बदलाव है, क्योंकि कुछ नेताओं द्वारा माननीय प्रधानमंत्री जी का स्वागत भी किया जाना है। मुझे सबसे पहले स्वागत पट्टिका को लेकर मंच पर जाना होगा फिर सभी के भाषण के बाद रेल परियोजनाओं का अनावरण होगा अर्थात अब मुझे मंच पर दो बार जाना होगा। अब थोड़ी सी बैचेनी प्रतीत हुई, क्योंकि पता ही नहीं चल रहा था कि कब मुझे मंच जाना होगा परंतु गृह मंत्रालय की टीम ने मुझे आश्वस्त किया कि वो मुझे तुरंत बताएंगे कि पहली बार कब मुझे आगे जाना है और अगले बार के लिए मैं पूरी तरह तैयार थी । बढ़ते हुए समय के साथ वो क्षण भी आ गया और हेलिकॉप्टर की जोरदार पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का आगमन हुआ, साथ ही करतल ध्वनि से पूरा वातावरण गूंज उठा। आवाज के साथ बहुत सारी गाड़ियां आती हुई दिखाई दी। देखते ही देखते खूब सारे लोग कार्यक्रम स्थल पर आए और मंच

स्वागत उद्बोधन और गांधी जयंती के उपलक्ष्य में महात्मा गांधी जी की तस्वीर पर प्रधानमंत्री जी के द्वारा पुष्प चढ़ाए गए और उसी समय मुझे स्वागत पट्टिका लेकर उनके पास जाना था, जिसे इशारा मिलते ही मैंने मंच पर पँहुचाया। राजस्थान के एक अग्रणी नेता ने वह पट्टिका मुझसे लेकर प्रधानमंत्री जी का स्वागत किया। यह मेरे जीवन का पहला मौका था, जहाँ मैंने माननीय प्रधानमंत्री जी को इतने पास से देखा था। उनका बहुत ही उज्ज्वल और आकर्षक व्यक्तित्व था, जिसे देखकर मैं एकदम स्तब्ध थी। स्वागत के पश्चात मैं वापस अपने नियत स्थान पर पँहुची और मेरे आसपास जो कुछ भी चल रहा था एकदम शून्य सा प्रतीत हो रहा था, शायद इसे ही मंत्रमुग्ध हो जाना बोलते है। थोड़ी ही देर में मुझे पुनः मंच पर जाना था और इस बार मुझे सीधे प्रधानमंत्री जी के पास पँहुचकर उन्हे ही एक रिमोट को देना था और मैंने बिल्कुल वैसे ही किया। जैसे ही मैं उनके निकट पँहुची, मुझे अपनी ओर आता देखकर वो स्वयं उठकर मंच के मध्य आए और मेरे एक बहुत छोटे से अभिवादन के बाद उन्होंने सीधे रिमोट उठाया और रेल्वे की सभी परियोजनाओं का डिजिटल लोकार्पण किया। दूसरी बार पुनः मंच पर जाने में और अधिक मज़ा आया। मानो ईश्वर ने यह अद्भुत मुलाकात से मुझे एक उपहार सा दिया था। सच में उस दिन मेरी खुशी का कोई ठिकना ही नहीं था।

उसके बाद मैं मंच से उतर कर अगली तरफ लगी सीट पर जा पँहुची और माननीय प्रधानमंत्री जी का पूरा उद्बोधन भी सुना। कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी ने मुझे खूब बधाई दी, हम सभी ने इस याद को सँजोने के लिए फ़ोटोज़ भी खिंचवाए। मैंने सभी के साथ अपने शहर रतलाम की ओर रुख किया। रेल में बैठ कर सोचने पर पिछले दो दिनों का सम्पूर्ण घटनाक्रम एक सपना ही लग रहा था, परंतु वास्तव में यह एक बड़ी सुखदायक सच्चाई थी।

टीवी पर हजारों बार देखने के बाद जब माननीय प्रधानमंत्री जी से सीधे मेरा सामना हुआ उस क्षण और अनुभव का वर्णन शब्दों में व्यक्त करना थोड़ा मुश्किल ही है, परंतु वो याद ही हृदय को आनंद से सराबोर कर देती है।

श्रेया चौऋषि

टीसीएन -1, लोकोमोटिव केयर सेंटर, रतलाम

सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 को जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में रामनाथसिंह के जमींदार परिवार में हुआ। बाल्यकाल से ही वे कविताएँ रचने लगी थीं। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण हैं। उनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह शिक्षा के प्रेमी थे और उन्हीं की देख-रेख में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई। इलाहाबाद के क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल में महादेवी वर्मा उनकी जूनियर और सहेली थीं। 1919 में खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ उनका विवाह हुआ तथा वे जबलपुर उनकी कर्मभूमि बनी। झाँसी की रानी (कविता) उनकी प्रसिद्ध कविता है। वे हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं।

1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थीं। वे दो बार जेल भी गई थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी, इनकी पुत्री, सुधा चौहान ने 'मिला तेज से तेज' नामक पुस्तक में लिखी है। इसे हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ने प्रकाशित किया है। वे एक रचनाकार होने के साथ-साथ स्वाधीनता संग्राम की सेनानी भी थीं। डॉo मंगला अनुजा की पुस्तक सुभद्रा कुमारी चौहान उनके साहित्यिक व स्वाधीनता संघर्ष के जीवन पर प्रकाश डालती है। साथ ही स्वाधीनता आंदोलन में उनके कविता के जरिए नेतृत्व को भी रेखांकित करती है। 15 फरवरी 1948 को एक कार दुर्घटना में उनका आकस्मिक निधन हो गया था।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल 46 कहानियां लिखी और अपनी व्यापक कथा दृष्टि से वे एक अति लोकप्रिय कथाकार के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित हैं।

'बिखरे मोती' उनका पहला कहानी संग्रह है। इसमें भग्नावशेष, होली, पापीपेट, मछलीरानी, परिवर्तन, दृष्टिकोण, कदम्ब के फूल, किस्मत, मछुए की बेटी, एकादशी, आहुति, थाती, अमराई, अनुरोध, व ग्रामीणा कुल 15 कहानियां हैं। इन कहानियों की भाषा सरल बोलचाल की भाषा है। अधिकांश कहानियां नारी विमर्श पर केंद्रित हैं।

'उन्मादिनी' शीर्षक से उनका दूसरा कथा संग्रह 1934 में छपा। इस में उन्मादिनी, असमंजस, अभियुक्त, सोने की कंठी, नारी हृदय, पवित्र ईर्ष्या, अंगूठी की खोज, चढ़ा दिमाग, व वेश्या की लड़की कुल 9 कहानियां हैं। इन सब कहानियों का मुख्य स्वर पारिवारिक सामाजिक परिदृश्य ही है।

'सीधे साधे चित्र' सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा व अंतिम कथा संग्रह है। इसमें कुल 14 कहानियां हैं। रूपा, कैलाशी नानी, बिआल्हा, कल्याणी, दो साथी, प्रोफेसर मित्रा, दुराचारी व मंगला – 8 कहानियों की कथावस्तु नारी प्रधान पारिवारिक सामाजिक समस्यायें हैं। हींगवाला, राही, तांगे वाला, एवं गुलाबसिंह कहानियां राष्ट्रीय विषयों पर आधारित हैं।

कहानी संग्रह

1. **बिखरे मोती** (1932)
2. **उन्मादिनी** (1934)
3. **सीधे-साधे चित्र** (1947)
4. **सीधे-साधे चित्र** (1983)

कविता संग्रह

1. **मुकुल।**
2. **त्रिधारा।**
3. **मुकुल तथा अन्य कविताएँ।**
4. **प्रसिद्ध कविताएं** - स्वदेश के प्रति, झंडे की इज्जत में, झांसी की रानी, सभा का खेल, बोल उठी बिटिया मेरी, वीरों का कैसा हो बसंत, जलियांवाला बाग में बसंत इत्यादि।

बाल-साहित्य

1. **झाँसी की रानी**
2. **कदम्ब का पेड़**
3. **सभा का खेल**

सुभद्रा जी पर केन्द्रित साहित्य

1. **मिला तेज से तेज** (सुधा चौहान लिखित लक्ष्मण सिंह एवं सुभद्रा कुमारी चौहान की संयुक्त जीवनी; हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित।)

सुभद्रा कुमारी चौहान का परिवारिक चित्र

सुभद्रा कुमारी चौहान का डाक टिकट

संकलन
राजेन्द्र सेन
वरि . अनुवादक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय रतलाम

कोरोना कैसा आया था **कविता**

परदे सी आंधी से आया
इंसानी सांसों को थमाया
बच्चों, बूढ़ो, जवानों सबको
बच्चों, बूढ़ो, जवानों सबको
कैसे इसने खाया था
कोरोना कैसा आया था, तबाही लाया था

बैठे हुए थे हम सब घर में
कोई न जाता था सफर में
सूनी गलियाँ, सूनी सड़कें
सूनी गलियाँ, सूनी सड़कें
सन्नाटा सा छाया था
कोरोना कैसा आया था, तबाही लाया था

रोजी रोटी छिन गई किसकी
लुट गई खुशियां रह गई सिसकी
रोते-रोते सूख गए आंसू
रोते-रोते सूख गए आंसू
फिर न कोई हंसाया था
कोरोना कैसा आया था, तबाही लाया था

दवा भी कोई काम न आई
देखो कितनी जानें गंवाई
जिसके कंधे बचपन बीता
जिसके कंधे बचपन बीता
उसे न कंधा लगाया था
कोरोना कैसा आया था, तबाही लाया था

घोड़े - बाजे न संगी साथी
ना ही मंडप, ना ही बराती
दुल्हन घर में आई अकेले
दुल्हन घर में आई अकेले
कैसा शगुन कराया था
कोरोना कैसा आया था, तबाही लाया था

धन-दौलत तो सब है नश्वर
विपदा में है केवल ईश्वर
जीना मरना सबको अकेले
जीना मरना सबको अकेले
ऐसा पाठ पढ़ाया था
कोरोना कैसा आया था, तबाही लाया था

उदय कुंवर पँवार
गोपनीय सहायक (संरक्षा)
मंडल कार्यालय रतलाम

पत्नी का महत्व

व्यंग्य

शादी के बाद जीवन में जो सबसे बड़ा बदलाव आता है, वो है "पत्नी"। पत्नी के आते ही घर का माहौल बदल जाता है, और पति की जिन्दगी एक नई दिशा में चलने लगती है। तो चलिए, पत्नी पर एक व्यंग्यात्मक नजर डालते हैं।

पत्नी, इस शब्द के उच्चारण से ही पतियों के चेहरे पर एक अलग ही भाव आ जाता है। ये वही पत्नी है जो शादी से पहले एक प्रेमिका थी, और शादी के बाद एक बॉस। कहते हैं, पत्नी का प्यार और उसकी सख्ती दोनों ही जरूरी हैं, ताकि पति रास्ते पर बना रहे।

सुबह की शुरुआत होती है पत्नी की मधुर आवाज से – "उठिए, आपको ऑफिस नहीं जाना?" ये वही आवाज है जो अलार्म क्लॉक को मात देती है। पति मन ही मन सोचता है, "कभी सोने भी दिया करो, भगवान के लिए!" लेकिन पत्नी की एक मुस्कान और सारी शिकायतें हवा हो जाती हैं।

नाश्ते के समय पत्नी की निगरानी होती है, "ये खाओ, वो मत खाओ, ये सेहत के लिए अच्छा है, वो नहीं।" पति सोचता है, "भई, शादी से पहले तो ये सब खाने पर कोई पाबंदी नहीं थी।" लेकिन ये तो प्यार का ही एक रूप है, जिसे पति को समझना पड़ता है।

घर से निकलते समय पत्नी की चेकलिस्ट – "चाबी ली? फोन लिया? लंच लिया?" पति के मन में सवाल उठता है, "क्या मैं स्कूल का बच्चा हूं?" लेकिन सच तो यह है कि पत्नी की ये छोटी-छोटी बातें पति की जिन्दगी को व्यवस्थित बनाती हैं।

शाम को जब पति घर लौटता है, तो पत्नी की नजरें दरवाजे पर होती हैं – "कितनी देर हो गई, कहाँ थे?" पति सोचता है, "कितने भी बहाने बना लो, पत्नी की छठी इंद्री सब समझ जाती है।"

टीवी का रिमोट, जो कभी पति का था, अब पत्नी का हो चुका है। "ये सीरियल देखना है, ये न्यूज बाद में देख लेना।" पति मन ही मन हंसता है, "चलो, टीवी भी अब तुम्हारा हो गया।"

लेकिन, इन सब के बावजूद पत्नी का साथ एक वरदान है। उसकी सख्ती, उसकी प्यार भरी डाँट, उसकी देखभाल – सबकुछ पति की जिन्दगी को खूबसूरत बनाते हैं। पत्नी के बिना जीवन अधूरा है, और उसका यह व्यंग्यात्मक प्यार ही पति को जीने की राह दिखाता है।

तो, पत्नियों को सलाम, जो अपने पति की जिन्दगी को अनुशासन और प्यार के धागे से बांधे रखती हैं, और इस व्यंग्य के माध्यम से हम सभी पतियों को यह समझना चाहिए कि पत्नी का हर रूप, हर रंग जीवन को सुंदर बनाता है।

राजेन्द्र सेन
वरि . अनुवादक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय रतलाम

राजभाषा संबंधी प्रश्नोत्तर

क्र	प्रश्न	उत्तर
1.	भाषा का उल्लेख संविधान के किस भाग में किया गया है ?	भाग 17 में
2.	संसदीय राजभाषा समिति में कुल कितने सदस्य होते है ?	कुल 30 सदस्य। लोकसभा से 20 तथा राज्यसभा से 10.
3.	संविधान लागू होते समय आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाओं का उल्लेख किया गया था ?	14
4.	संविधान के किस अनुसूची में 22 भाषाओं का उल्लेख किया गया है ?	आठवीं अनुसूची
5.	संसदीय राजभाषा समिति की किस उप-समिति द्वारा बैंकों का निरीक्षण किया जाता है ?	तृतीय उप समिति.
6.	21 वें संविधान संशोधन द्वारा आठवीं अनुसूची में किस भाषा को जोडा गया था?	सिंधी
7.	कोंकणी, मणिपुरी भाषा को किस संविधान संशोधन द्वारा आठवीं अनुसूची में जोडा गया था ?	71 वें
8.	राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) में किस बात का उल्लेख है ?	द्विभाषी में कागजात जारी करना ।
9.	राज्य विधान मंडल में प्रयोग कि जाने वाली भाषा का उल्लेख संविधान के किस अनुच्छेद में हैं ?	210 में.
10.	राष्ट्रपति के आदेश कुल कितने खंडों में जारी हो चुके हैं ?	8 खंडों में.
11.	92 वें संविधान संशोधन द्वारा आठवीं अनुसूची में किस भाषा को जोड़ा गया था?	बोडो
12.	संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा का उल्लेख संविधान के किस अनुच्छेद में है ?	120
13.	किसी प्रदेश की राजभाषा यदि हिंदी को बनाया जाना हो तो उसके लिए क्या प्रक्रिया अपनानी होगी ?	उस राज्य की विधानसभा को इस विषयक प्रस्ताव पारित करना होगा।
14.	संविधान के किस अनुच्छेद में कहा गया कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी ?	343
15.	हिंदी को राजभाषा का दर्जा कब मिला ?	14 सितंबर 1949
16.	सन 1957 में संसदीय राजभाषा समिति का गठन किसकी अध्यक्षता में किया गया ?	जी.बी.पंत
17.	साहित्य अकादमी की स्थापना कब हुई ?	1954
18.	नेशनल बुक ट्रस्ट की स्थापना कब हुई ?	1957
19.	वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना कब हुई ?	1961
20.	केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना कब हुई ?	1960

ओमप्रकाश मीना वरि . अनु (राजभाषा)

ई –ऑफिस हेतु उपयोगी हिंदी नोटिंग

राजभाषा विभाग रतलाम द्वारा ई -ऑफिस में पहले से ही उपलब्ध हिंदी नोटिंग और ई -ऑफिस हेतु प्रस्तावित हिंदी नोटिंग का संग्रह तैयार किया गया है जो श्रंखला के रूप में उपलब्ध कराई जा रही है |

ई -ऑफिस में पहले से ही उपलब्ध हिंदी नोटिंग **गतांक से आगे .....**

क,ख,ग,घ,ड - 2

- कृपया नवीनतम अनुदेशों के अनुसार मामले की पुनः / दुबारा जांच करें।
- कृपया बैठक की कार्य सूची का कार्यवृत्त प्रस्तुत करें।
- कृपया सम्बंधित फाइल साथ प्रस्तुत करें।
- कृपया सूचना मंगाए।
- कृपया हाशिये में दी गयी अभ्युक्तियॉ देखेँ।

ई -ऑफिस हेतु प्रस्तावित हिंदी नोटिंग

क,ख,ग,घ,ड - 2

- कृपया मिलें/चर्चा करें/विचार विमर्श करें
- कृपया मुझसे मिलें
- कृपया बात करें
- कृपया पिछले कागज़ात दिखाएं
- कागज़ात लेकर आज ही बात करें
- कागज़ात तुरंत प्रस्तुत किए जाएं
- कोई कार्रवाई न की जाए
- क्या स्थिति है ?
- गतिविधियों पर निगरानी रखें

दौलतराम ताबियार
वरि अनुवादक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय रतलाम

शेष अगले अंक में ....

दुर्घटना राहत गाड़ी संचालन

गतांक से आगे .....

प्रश्न(41) मटेरियल ट्रेन या टावर वैगन की दुर्घटना होने पर कितने हूटर बजाए जाएंगे ?

उत्तर:- 4 हूटर बजाए जाएंगे।

प्रश्न(42) गंभीर दुर्घटना जिसमें कोचिंग ट्रेन भी शामिल है इसकी जांच यदि सीआरएस द्वारा करने में असमर्थ हो तब किसस्तर की जांच की जाएगी ?

उत्तर:- SAG (वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड अधिकारी) के द्वारा जांच की जाएगी।

प्रश्न(43) वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड स्तर की दुर्घटना जांच समिति का अध्यक्ष कौन होता है ?

उत्तर:- PCSO (प्रमुख मुख्य संरक्षा अधिकारी)

प्रश्न(44) वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड स्तर की दुर्घटना जांच रिपोर्ट किसे प्रेषित की जाती है ?

उत्तर :- GM (महाप्रबंधक)

प्रश्न(45) यार्ड दुर्घटना की जांच रिपोर्ट किस को प्रेषित की जाएगी ?

उत्तर:- वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी को।

प्रश्न(46) आपदा प्रबंधन में साइट मैनेजमेंट में UCC का विस्तृत रूप क्या है ?

उत्तर:- यूनिफाइड कमांड सेंटर।

प्रश्न(47) गाड़ी दुर्घटना में मारे गए यात्री के निकटतम संबंधी को कितनी अनुग्रह राशि दी जाएगी ?

उत्तर:- 50000/-

प्रश्न(48) गाड़ी दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल यात्री 40 दिन तक हॉस्पिटल में भर्ती रहता है, तो कितनी अनुग्रह राशि दी जाएगी ?

उत्तर:- 28000/-

प्रश्न(49) मानव रहित समपार पर गाड़ी दुर्घटना में सड़क उपयोगकर्ता की मृत्यु होने पर उसके संबंधी को कितनी अनुग्रह राशि दी जाएगी ?

उत्तर:- कुछ भी नहीं दिया जाएगा।

प्रश्न(50) मानवरहित समपार पर गाड़ी दुर्घटना में यदि सड़क उपयोगकर्ता गंभीर रूप से घायल हो जाता है ,तब घायल के संबंधी को कितनी अनुग्रह राशि दी जाएगी ?

उत्तर:- कुछ भी नहीं दिया जाएगा।

दुर्गा प्रसाद वर्मा
सेवानिवृत्त -संरक्षा सलाहकार (यातायात)
रतलाम

शेष अगले अंक में .....

सुभद्रा कुमारी चौहान

हिंदी की प्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म इलाहाबाद के निकट निहालपुर में जमींदार परिवार में हुआ। ये राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री रही हैं। इन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल की यातनाएं सही। इनकी रचनाओं की सादगी हृदयग्राही हैं। "झाँसी की रानी" इनकी अत्यंत लोकप्रिय कविता है। इनका निधन 15 फरवरी 1948 को हुआ।

जन्म 16 अगस्त 1904

मेरा नया बचपन

बार-बार आती है मुझको, मधुर याद बचपन तेरी।
गया, ले गया तू जीवन की, सबसे मस्त खुशी मेरी॥

चिंता-रहित खेलना-खाना, वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद॥

ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था, छुआछूत किसने जानी।
बनी हुई थी वहाँ 'झोंपड़ी' और 'चीथड़ों' में रानी॥

रोना और मचल जाना भी, क्या आनंद दिखाते थे।
बड़े-बड़े मोती-से आँसू, जयमाला पहनाते थे॥

वह भोली-सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप।
क्या आकर फिर मिटा सकेगा, तू मेरे मन का संताप॥

मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन-सी फूल उठी यह, छोटी-सी कुटिया मेरी॥

माँ ओ' कहकर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आयी थी।
कुछ मुँह में कुछ लिये हाथ में, मुझे खिलाने लायी थी॥

मैंने पूछा 'यह क्या लायी?' बोल उठी वह 'माँ काओ'।
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से, मैंने कहा- 'तुम्ही खाओ'॥

पाया मैंने बचपन फिर से, बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर, मुझ में नवजीवन आया॥

मैं भी उसके साथ खेलती, खाती हूँ, तुतलाती हूँ।
मिलकर उसके साथ स्वयं, मैं भी बच्ची बन जाती हूँ॥

राजभाषा विभाग, रतलाम मंडल (प.रे.)

20